विचार बिन्दु

किसी पूर्वतन ख्याति का उत्तराधिकार प्राप्त करना एक संकट मोल लेना है।

–टैगोर

क्या हमने इन सारी बातों पर आहत होना छोड़ दिया है?

पुरानी पीढ़ी का हूं तो मेरे आदर्श, मेरे सपने, मेरी अपेक्षाएं – ये सब भी पुराने ही हैं। अब लोकतंत्र और चुनाव को ही लीजिए। पहले दूसरे चुनाव की तो याद नहीं–हालांकि तब तक मेरा जन्म हो चुका था– उसके बाद के सारे चुनावों की यादें हैं। अब तक हुए चुनावों को, उनके बदलावों को दिलचस्पी से और नज़दीक से देखा है। जिन चीज़ों को देखा नहीं उन्हें किताबें पढ़–पढ़कर भी जाना। अध्यापन का मेरा विषय भले ही साहित्य रहा, राजनीति में मेरी गहरी दिलचस्पी रही और अपने उन दोस्तों से हटकर जिन्होंने राजनीति को अपनी चाय का प्याला मानने से इंकार किया, मैं यह मानते हुए कि अगर राजनीति मेरे जीवन को प्रभावित करती है तो मुझे भी उसमें दिलचस्पी रखनी चाहिए, उसके बारे में जानने और जितना सम्भव और अनुमत हो, उसमें अपनी टांग अड़ाने से पीछे नहीं हटा। जब तक नौकरी में था, उसकी अपनी मर्यादाएं थीं, अत: मेरी सक्रियता केवल मानसिक थी। सेवा निवृत्त हो जाने के बाद खुलकर अपनी बात कहने की आज़ादी मिल गई, और उसका सीमित व संयमित उपयोग मैंने किया। अब भी करता हूं। अपने लेखन के माध्यम से मैं समकालीन परिदृश्य में कुछ हस्तक्षेप करने का सतत प्रयास करता हूं।

मैं लोकतंत्र को सर्वाधिक आदर्श व्यवस्था मानता हूं। आज़ादी के बाद भारत ने इस व्यवस्था को अपनाया और इसी के तहत अपने सारे वयस्क नागरिकों को मताधिकार प्रदान किया। आज़ादी मिलने के बाद के प्रारंभिक वर्षों में काँग्रेस को आज़ादी की लड़ाई में उसकी महती भूमिका का लाभ मिला,पुरस्कार भी और उसने भी कमोबेश अपने को देश की सरकार चलाने का सुपात्र प्रमाणित किया। आज के राजनेता भले ही अपने बड़बोलेपन के जुनून में गरज–गरज कर यह पूछने की हिमाकत कर लें कि काँग्रेस ने सत्तर बरसों में क्या किया, इस बात से इंकार करना सच्चाई से आंख मूंदना होगा कि योजनाबद्ध आर्थिक विकास करके और एक ऐसे ढांचे का निर्माण करके जो सत्ता को निरंकुश न होने दे, काँग्रेस ने अपने दायित्व का बहुत उम्दा निर्वहन किया। आज़ादी मिलने के बाद हमें जिन नेताओं का नेतृत्व प्राप्त हुआ वे सही अर्थों में कद्दावर लोग थे। उनके पास दृष्टि थी और था बड़ा मन। आज भले ही हम उस काल के बहुत सारे कामों में कमियां निकाल कर खुश हो लें, सच तो यह है कि उस काल में जो हुआ उससे बेहतर होना संभव ही नहीं था। लेकिन समय सदा एक–सा नहीं रहता है। जो शिखर पर पहुंचता है उसे ढलान पर भी जाना होता है (काश! यह बात अब भी समझी जाए!)। 1962 के चीनी आक्रमण ने नेहरू की छवि की चमक कम की और उसके बाद हुई बहुत सारी बातों ने काँग्रेस को कमज़ोर और प्रतिपक्ष को मज़बूत किया। उस पूरे काल के विस्तार में जाने का यहां अवकाश नहीं है। बस, इतना कि भले ही काँग्रेस कमज़ोर होती गई और विपक्षी दल मज़बूत होते गए, उनमें पारस्परिक सद्भावना और शालीनता में कमी नहीं आई। इस लिहाज़ से भारतीय संसद की अनेक बहसों को याद किया जा सकता है जिनमें नेहरू की भीषण आलोचना की गई लेकिन जो उनका विरोध करते थे वे भी उनके प्रति सद्भावी सदा बने रहे। और यह क्रम नेहरू के बाद भी काफी समय तक ज़ारी रहा। अटल बिहारी वाजपेयी को संयुक्त राष्ट्र संघ में भेजने का प्रसंग हो या उनको इलाज़ के लिए विदेश भेजने की पहल, कभी ऐसा नहीं लगा कि सत्तारूढ़ दल विपक्ष के प्रति दुर्भावना रखता है। अलबत्ता इमर्जेंसी का दौर ऐसा रहा जब तत्कालीन प्रधान मंत्री ने अपने विरोधियों को जेल में डाला, लेकिन तब भी विपक्ष का उनके प्रति रवैया सम्मानपूर्ण ही बना रहा। उस ज़माने के बड़े नेताओं के भाषणों को याद करें तो उन भाषणों में फूहड़पन, मिथ्याकथन, कटुता ढूंढे से भी नहीं मिलेगी। बड़े लोग अगर कुछ कहते तो उनके लहज़े में भी बड़प्पन होता था। एक नागरिक के रूप में हम कभी यह सोच भी नहीं सकते थे कि इंदिरा गांधी या राजीव गांधी या मोरारजी देसाई या अटल बिहारी वाजपेयी, या जयप्रकाश नारायण या मधु लिमये या जॉर्ज फर्नाण्डीज़ या जेबी कृपलानी या चंद्रशेखर या कोई भी और नेता मंच से कोई हलकी बात कहेगा। वे एक–दूसरे का भयंकर विरोध करते लेकिन शालीनता की लक्षण रेखा कभी किसी ने लांघी हो, याद नहीं आता। कुल मिलाकर उनके विरोध में भी एक गरिमा हुआ करती थी।

भारतीय संसद में हाल के बरसों में जितने प्रतिपक्षी सांसदों को उनकी सदस्यता निलम्बित कर उनके अधिकार से वंचित किया गया है वह संख्या हमें स्तब्ध करती है। जितने बुद्धिजीवी अभी अज्ञात या अस्वीकार्य कारणों से जेलों की सलाखों के पीछे हैं, उनकी गिनती करना भी कठिन है। अब तो राज्यों के निर्वाचित मुख्यमंत्रियों की आज़ादी भी असहनीय होने लगी है।

पिछले ज़माने के सत्ताधीश इस बात को मानकर चलते थे कि प्रतिपक्ष का धर्म ही उनका विरोध करना है। वे विरोध को सहज भाव से स्वीकार करते थे। हर दल सत्ता में बने रहना या आना चाहता था, लेकिन दूसरे को कुचलने का उनका दूर–दूर तक कोई इरादा नहीं होता था। सद्भावनापूर्ण सह– अस्तित्व का भाव सदा विद्यमान रहा। लेकिन आहिस्ता–आहिस्ता यह सद्भाव छीजता गया और अब हालत यह हो गई है कि जो सत्ता में है केवल वे ही नहीं, उनके समर्थक–प्रशंसक भी दूसरे किसी भी पक्ष का होना ही स्वीकार या सहन करने को तैयार नहीं हैं। विरोध की तो बात ही क्या करें, वैचारिक असहमति का मतलब अब सीधी लड़ाई और दुश्मनी हो गया है। सत्ता ने अपने को इतना ताकतवर मान और बना लिया है कि वह अपने खिलाफ उठने वाली हर आवाज़ को कुचलना अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानने लगी है। भारतीय संसद में हाल के बरसों में जितने प्रतिपक्षी सांसदों को उनकी सदस्यता निलम्बित कर उनके अधिकार से वंचित किया गया है वह संख्या हमें स्तब्ध करती है। जितने बुद्धिजीवी अभी अज्ञात या अस्वीकार्य कारणों से जेलों की सलाखों के पीछे हैं, उनकी गिनती करना भी कठिन है। अब तो राज्यों के निर्वाचित मुख्यमंत्रियों की आज़ादी भी असहनीय होने लगी है। जिन संवैधानिक संस्थाओं को हमारे बड़े नेताओं ने इतने जतन से बनाया और पाला पोसा उनको योजनाबद्ध तरीके से नख–दंत विहीन कर दिया गया है। मीडिया को पूरी तरह पालतू बना दिया गया है। उसमें दिन–रात केवल सत्ता की भक्ति का संगीत गूंजता है।

फिर अतीत की तरफ लौटें। जो हाल नेताओं का था वही आम जन का भी था। कोई इसका समर्थक होता कोई उसका। पारस्परिक बहसें होतीं, दूसरों के काम में खोट बताया जाता, आरोप लगते, जवाब में प्रत्यारोप लगते लेकिन रिश्ते ख़राब नहीं होते। बहस ख़त्म तो फिर एक हो जाते। कोई किसी को गाली नहीं देता, कोई किसी की देशभक्ति में सन्देह नहीं करता, किसी को यह घमंड नहीं होता कि देश का या धर्म का पूरा ठेका उसी के दल के पास है। लेकिन अब आप अपनों से भी खुलकर मन की बात नहीं कर सकते हैं। भयंकर असहिष्णुता का माहौल बन चुका है। इतिहास और तथ्यों को सर के बल खड़ा किया जा चुका है। बड़े नेता जैसे और जब चाहें इतिहास की ऐसी–तैसी कर देते हैं और कोई उनकी तरफ उंगली भी नहीं उठा सकता। उन्हें मिथ्या कथन की निर्बाध स्वतंत्रता मिल चुकी है। और हम नागरिकों ने भी इसे उनके मूलभूत अधिकार के रूप में स्वीकार कर लिया है। 'पहले आती थी हाल–ए–दिल पे हंसी, अब किसी बात पे नहीं आती'। अब हम किसी भी बेहूदगी पर नाराज़ होना तो दूर, चकित भी नहीं होते। दुष्यंत ने बहुत पहले जो कह था, वह अब तबसे भी ज़्यादा सही साबित हो रहा है:–'इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात/अब किसी भी बात पर खुलती नहीं हैं खिड़कियाँ।' वॉट्सएप विश्वविद्यालय ज्ञान का एकमात्र स्त्रोत रह गया है।

और इसी माहौल के बीच चुनाव हो रहे हैं। मुझ जैसे पुरानी सोच के लोग कल्पना करते हैं कि चुनाव हो रहे हैं तो सत्तारूढ़ दल यह बताएगा कि उसने क्या किया है और क्या करना चाहता है, और ज़ाहिर है कि प्रतिपक्षी उसकी नाकामयाबियां गिनाते हुए अपनी योजनाएं बताएंगे। लेकिन ऐसा हो नहीं रहा है। सत्तारूढ़ दल अपनी उपलब्धियां बताने की बजाय उस दल को कोस रहा है जो दस बरस पहले तक सत्ता में था और वे जिनके पास अभी सत्ता नहीं है उनको सवालों के घेरे में खड़ा कर रहा है। पूरा का पूरा सत्तारूढ़ दल एक व्यक्ति में सिमट आया है। सारा चुनाव ही दल के नहीं व्यक्ति के नाम पर लड़ा जा रहा है। हर तरह की जवाबदेही से किनारा कर लिया गया है। अगर इतने से काम नहीं चल रहा है तो मिथ्या और नितांत अप्रामाणिक व द्वेषपूर्ण बातों के माध्यम से देश की सद्भावना की चादर को तार–तार करने का प्रयास करते हुए अपनी जीत की भूमिका तैयार करने में संकोच नहीं किया जा रहा है। जो बात कभी मनमोहन सिंह ने कही ही नहीं उसे उनके माथे पर थोप कर अपनी जीत का जुगाड़ करने की चेष्टा की जा रही है। मिथ्या कथनों को इतनी बार और इतनी ज़ोर से दुहराया जाता है कि भोले लोग उसी को सच मान बैठते हैं। अब नैतिक–अनैतिक की सीमा रेखा मिट चुकी है। अपने–पराए का भेद भी ख़त्म हो चुका है। जीतने के लिए अगर अपनों की भी बलि देनी पड़े तो कोई संकोच नहीं! यह हमने हाल में देखा ही है। अब एकमात्र लक्ष्य जीत रह गया है!

और इस सबका सबसे खराब पक्ष यह है कि हमने भी इन तमाम बातों पर आहत होना छोड़ दिया है!

–अतिथि संपादक
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

बल्लूपुरा के लोग पांच माह से पीने का पानी खरीदने को मजबूर

ग्रामीणों के अनुसार रोड निर्माण कार्य के चलते रोड ठेकेदार ने गांव में जल जीवन मिशन के तहत बिछाई गई पानी की लाइन को हटाकर दूर फेंक दिया

पाटन, (निसं)। ग्राम पंचायत बल्लूपुरा में इस भयंकर गर्मी में लोग पीने के पानी के लिए इधर–उधर चक्कर काटते फिरते हैं तथा मोल का पानी पीने को मजबूर है। ग्राम पंचायत बल्लूपुरा में अगस्त महिने से रोड निर्माण कार्य शुरू हुआ था। रोड निर्माण कार्य के चलते रोड ठेकेदार ने गांव में जल जीवन मिशन के तहत बिछाई गई पानी की लाइन को हटाकर दूर फेंक दिया, जिसके चलते रोड के आसपास रहने वाले लोगों को गत पांच महीने से पीने के पानी के लिए इधर–उधर भटकना पड़ रहा है या फिर उन गरीब लोगों को मजबूरी में मोल का पानी लेकर पीना पड़ रहा है।

पिछली सरकार ने विधायक मोदी की अनुसंशा पर रोड की स्वीकृति प्रदान की थी जिसकी लंबाई तीन किलोमीटर है। यह सड़क सवा तीन करोड़ रुपए की लागत से बल्लूपुरा ग्राम पंचायत से रामपुरा रोड तक बनाई जानी है तथा रोड की चौड़ाई 18 फीट की होनी है। रोड निर्माण में जो मकान, दीवार, बाधा बन रही थी उनको हटाया गया है। सड़क निर्माण कार्य के दौरान अधिकांश अतिक्रमणों को हटाया गया है परंतु दोनों तरफ तीन–तीन फीट जगह ब्रहम के लिए नहीं है। अधिकांश अतिक्रमण हटा दिए गए हैं परंतु अभी भी कुछ अतिक्रमण बचे रहने से निर्माण कार्य बंद पड़ा हुआ है।

ग्रामीणों ने बताया कि रोड निर्माण कार्य के दौरान ठेकेदार ने पाइपलाइन हटाकर दूर डाल दी जिसके चलते पीने का पानी नसीब नहीं हो रहा है। कुछ लोगों को पुरानी पाइप लाइन से दो चार बाल्टी पानी की मिल जाती है जिससे लोग पूर्ति कर रहे हैं। गौरतलब है कि केंद्र की सरकार जल जीवन मिशन योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में अरबों रुपए खर्च कर घर–घर पानी पहुंचाने की व्यवस्था में लगी हुई है, वहीं ग्राम पंचायत बाल्लूपुरा की बहुत बड़ी लापरवाही सामने आई है कि जानबूझकर लोगों को पानी के लिए परेशान करने में लगी हुई है।

पाटन के ग्राम बल्लूपुरा में पानी का टैंकर आते ही महिलाओं की भीड़ लग जाती है।

इस बारे में ग्राम पंचायत बल्लूपुरा सरपंच हवा सिंह ने बताया कि रोड निर्माण कार्य के चलते पाइप लाइन को हटाया गया है तथा गांव के लोग पुरानी पाइप लाइन से पानी ले रहे हैं। रोड निर्माण कार्य पूरा होते ही पाइप लाइन डाल दी जाएगी और लोगों को सुचारू रूप से पेयजल व्यवस्था मिल सकेगी।

ठेकेदार नवीन कुमार का कहना है कि रोड निर्माण कार्य की स्वीकृति मिली है, अगस्त माह से कार्य शुरू हो चुका है। पाइप लाइन हटाने और रोड में आ रहे मकानों को हटाने का काम हमारा नहीं है, यह कार्य पीडब्ल्यूडी तथा जलदाय विभाग का है। रोड बल्लूपुरा से रामपुरा सड़क तक बनाई जाएगी, जिसकी लंबाई 3 किलोमीटर है।

■ **कुछ लोगों को पुरानी पाइप लाइन से दो–चार बाल्टी पानी की मिल जाती है, जिससे लोग पूर्ति कर रहे हैं**

ग्रामीण मुकेश शर्मा का कहना है कि पानी के टैंकर मंगवाकर प्यास बुझा रहे हैं, वहीं गरीब लोग पुरानी लाइन से एक दो बाल्टी पानी की भरकर काम चला रहे हैं। विभाग को चाहिए था कि रोड निर्माण से पहले पेयजल व्यवस्था दुरुस्त करवाता जिससे आमजन इस गर्मी में पानी के लिए परेशान नहीं होता।

मनोज मीणा, नई कॉलोनी, ग्राम पंचायत बल्लूपुरा का कहना है कि पानी के अभाव में लोकसभा चुनावों का बहिष्कार किया था, उसके बावजूद भी पानी की व्यवस्था नहीं की गई है। यही हाल पंचायत मुख्यालय का है जहां लोग पानी के लिए त्राहि–त्राहि कर रहे हैं।

सांभर में चार साल से उलझा रहा पेयजल टंकी निर्माण का काम

नगर पालिका से हटाकर अब सरकार ने पीएचईडी को सौंपा जिम्मा

सांभरझील, (निसं)। सांभर में पीएचईडी की तरफ से चिन्हित किए गए हाईजोन क्षेत्रों में पेयजल के लिए करीब दो दशक से परेशान लोगों को अभी और इंतजार करना पड़ेगा। निवर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान पुरानी कोतवाली परिसर में जलाशय बनाए जाने के लिए विभाग की तरफ से इसका जमीनी खाका तैयार कर सरकार के पास स्वीकृति हेतु भिजवाया गया था। नगरपालिका सांभर को इस काम के लिए कार्यकारी एजेंसी नियुक्त किया गया था लेकिन औपचारिकताओं को पूरा नहीं करने के कारण जलाशय निर्माण का काम शुरू नहीं हो सका और योजना अधर में लटक गई। सरकार बदलने के बाद जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के आला अफसरों ने स्थानीय अभियंताओं की तकनीकी रिपोर्ट के आधार पर इस योजना को पुन: शुरू किए जाने हेतु वित्तीय और प्रशासनिक स्वीकृति हेतु पत्रावली वर्तमान सरकार को भिजवाई थी। अब इस काम के लिए अमृत योजना में 5 करोड़ 98 लख रुपए स्वीकृत किए गए हैं।

■ **इस काम के लिए अमृत योजना में स्वीकृत हुए 5.98 करोड़ रुपये**

विभागीय सूत्रों ने बताया कि चुनाव आचार संहिता हटने के बाद ही तकनीकी स्वीकृति मिलते ही इस कार्य के लिए शीघ्र निविदा निकाली जाएगी। लोगों का कहना है कि पूर्व विधायक की ओर से इसके लिए ठोस प्रयास किए होते तो यह योजना कभी की सफल हो जाती और लोगों को परेशानी से नहीं जूझना पड़ता। जलाशय निर्माण के बाद यहां के वार्ड 19, 20, 21, 22 के करीब 2 हजार से अधिक लोगों को इस गर्मी के सीजन में राहत मिलने की उम्मीद नजर नहीं आती है। अभी बीसलपुर बांध में पानी के लगातार हो रही कमी के कारण करीब 6 लाख लीटर पानी सांभर को कम मिल रहा है, यानी अभी 34 लाख लीटर पानी ही उपलब्ध हो रहा है।

इस मामले में कनिष्ठ अभियंता ओपी वर्मा ने बताया कि जिन मौहल्लों की पेयजल लाइन एक बार भी नहीं बदली गई है, या जो पाइप लाइन अंदर से जाम होने के कारण पेयजल सप्लाई में बाधा का प्रमुख कारण बना हुई है उसको बदलने की योजना पर भी अमल किया जाएगा। भीषण गर्मी को दृष्टिगत रखते हुए पेयजल की कमी से जूझ रहे इलाकों में विभाग की तरफ से टैंकर से पेयजल सप्लाई पहुंचाने के लिए भी कार्य योजना को अंतिम रूप दिया जाएगा।

खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से सकारात्मक परिणाम सामने आये

कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्ष से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर रिसर्च किया गया

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर और इसके आसपास के जिले नागौर, चूरू समेत खारे पानी (लवणीय जल) वाले जिले सौंफ उत्पादन के हब बन सकते हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में विगत तीन वर्ष से लवणीय जल (खारे पानी) में सौंफ की खेती पर किए जा रहे रिसर्च के परिणाम सकारात्मक आए हैं।

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना "लवण ग्रस्त मृदाओं का प्रबंधन एवं खारे जल का कृषि में उपयोग" अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा लवणीय सिंचाई जल का सौंफ की विभिन्न किस्मों की वृद्धि एवं उपज पर अनुसंधान किया गया। जिसके परिणाम बेहद सकारात्मक आए हैं। इस अनुसंधान से ना केवल राज्य के मसाला उत्पादक किसानों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में सौफ का क्षेत्रफल एवं उत्पादता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रामेश्वर लाल मीणा ने प्रोजेक्ट का विजिट कर बताया कि तीन वर्ष के अनुसंधान से निष्कर्ष निकला है कि सौंफ की किस्म आरएफ 290 लवणीय जल (खारा पानी) सिंचाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। प्रति हैक्टेयर करीब 9 क्विंटल सौंफ का उत्पादन हुआ। लिहाजा लवणीय जल सिंचाई वाले जिलों यथा बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर इत्यादि में एवं उन जिलों में भी जहां ट्यूबवैल से खेती की जाती है वहां सौंफ की खेती से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. एसआर यादव ने बताया कि बीकानेर जिले में किसान भाई मसाला फसलों की तरफ काफी आकर्षित हो रहे हैं।

■ **अब बीकानेर, नागौर, चूरू, बाड़मेर सहित अन्य खारे पानी वाले जिले बन सकते हैं सौंफ उत्पादन के हब**

ऐसे में कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के लवणीय जल में सौंफ की खेती को लेकर विगत तीन वर्ष के अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणाम से जिले में सौंफ की खेती को एक विकल्प के रूप में लिया जा सकता है। प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने अनुंसधान के आधार पर बताया कि विद्युत चालकता (ईसी) 4 डेसी/मीटर तक के पानी को बूंद बूंद सिंचाई के जरिए उपयोग में लेकर सौंफ की किस्म आरएफ 290 के जरिए 9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर का उत्पादन लिया जा सकता है।

विदित है कि देश में राजस्थान और गुजरात प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य है जो देश में सौंफ उत्पादन में करीब 96 फीसदी का योगदान देते हैं। राजस्थान में सबसे ज्यादा सौंफ नागौर जिले (करीब 10 हजार हेक्टयर) में होती है। इसके अलावा सिरोही, जोधपुर, जालौर,जैसलमेर भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसलमेर और बीकानेर जिले में भी सौंफ की खेती की जाती है लेकिन खारे पानी में सौंफ की खेती पर किए गए अनुसंधान से आए सकारात्मक परिणामों ने बीकानेर और उसके आसपास के जिलों में बड़े पैमाने पर सौंफ उत्पादन की उम्मीद जगा दी है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 13 मई, 2024

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, पुनर्वसु नक्षत्र दिन 11:24 तक, शूल योग प्रात: 7:41 तक, कौलव करण दिन 2:27 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मेष, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–मीन, बुध–मेष, गुरू–वृष, शुक्र–मेष, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से दिन 11:24 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 11:24 से सूर्योदय तक है। रवियोग दिन 11:24 से आरम्भ होगा। आज चन्दन छठ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:24 तक, शुभ 9:04 से 10:43 तक, चर 2:03 से 3:43 तक, लाभ–अमृत 3:43 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:45, सूर्यास्त 7:01

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृश्चिक

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे।

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

विवादित मामालों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।